1. प्रदत्तपदेषु संयोगस्य उदाहाणानि पृथक् कृत्वा लिखत—
A. महेशः
B. उष्णः
C. वागीशः
D. पावकः (B)

व्याख्या : स्वर रहित व्यञ्जनों (हल्) के व्यवधान रहित सामीप्य भाव को संयोग कहते हैं, यथा— उष्ण में ष्, तथा ण् का संयोग है।

2. पदसञ्ज्ञकपदानि पृथक् कृत्वा लिखत—
A. पठ्
B. दृश
C. हरि
D. हस् (C)

3. आगमवर्णान् स्पष्टीकृत्य पृथक् कुरुत—
A. इति+ आदि - इत्यादि
B. तरु+ छाया - तरुच्छाया
C. पितृ+आदेशः - पित्रादेशः
D. अनु+ इच्छति – अन्विच्छति (B)

व्याख्या -किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है, तब वह आगम कहलाता है(मित्रवदागमः), जैसे— तरु +छाया = तरुच्छाया।

4. 'आदेशवर्णान् स्पष्टीकृत्य पृथक् कुरुत—
A. वृक्ष +छाया = वृक्षच्छाया
B. वृक्ष+ छेदः = वृक्षच्छेदः
C. अनु+छेदः=अनुच्छेदः
D. यदि +अपि = यद्यपि (D)

व्याख्या - किसी वर्ण का ़ हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है(शत्रुवद् आदेशः), जैसे— यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य' आदेश हुआ है।

5. उपधा विधायक सूत्रं किम् अस्ति?
A. अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा
B. सुप्तिङन्तं पदम्
C. क्तक्तवतूनिष्ठा
D. हलोऽनन्तराः संयोगः (A)

व्याख्या : किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व(वर्ण) को उपधा कहते हैं, जैसे— चिन्त् में 'त' अंतिम वर्ण है और उससे पूर्व 'न' उपधा है (अलोऽन्त्यात पूर्व उपधा)। जैसे
महत् में अन्तिम वर्ण 'त' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

6. यण् स्थाने इक् प्रयोगः इति किम् कथ्यते?
A. पद संज्ञा
B. सम्प्रसारणम् संज्ञा
C. संहिता संज्ञा
D. संयोग संज्ञा (B)

व्याख्या : यण् (य, व् , र, ल) के स्थान पर इक्(इ, उ, ऋ, लृ) के प्रयोग को सम्प्रसारण कहते हैं (इग्यणः सम्प्रसारणम)। जैसे— यज्-इज्→ इज्यते

7. पद संज्ञा विधायक सूत्रं किम् अस्ति?
A. अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा
B. सुप्तिङन्तं पदम्
C. क्तक्तवतूनिष्ठा
D. हलोऽनन्तराः संयोगः (B)

व्याख्या : संज्ञा के साथ सु,औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, झि आदि क्रियापदों में आने वाले 18 प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ,जस् (अः) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (तः) अन्ति आदि विभक्तियोंके जुड़ने से सुबन्त और तिङन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है (सुप्तिङन्तं पदम)

8. निष्ठा संज्ञा कस्मिन् प्रत्यये भवति?
A. तुमुन्
B. ल्यप्
C. क्तक्तवतू
D. यत् (C)

व्याख्या - क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं— 'क्तक्तवतूनिष्ठा'।
इनके योग से भतूकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे— गतः, गतवान आदि।

9. विकरण भेदात् धातवः कति गणाः विभक्तः?
A. पञ्च
B. षड्
C. अष्ट
D. दश (D)

व्याख्या : धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप् (अ) श्यन् (य) श्नु (श्नु), आदि प्रत्यय विकरण कहलाते हैं, यथा— भवति में भू + ति के मध्य में 'शप्' हुआ है (भू + अ + ति)। विकरण भेद से ही धातुएँ 10 विभिन्न गणों में विभक्त होती हैं।

10. संहिता संज्ञा विधायक सूत्रं किम् अस्ति?
A. परः सन्निकर्ष संहिता :
B. सुप्तिङन्तं पदम्
C. क्तक्तवतूनिष्ठा
D. हलोऽनन्तराः संयोगः (A)

Explanation : वर्णों के अत्यन्त सामीप्य अर्थात् व्यवधान रहित सामीप्य को संहिता कहते हैं (परः सन्निकर्षः संहिता)। वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं।

मिशन ज्ञान
जब चाहें, जहाँ चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App